Ajanta
Page No.
Date

सद्गुणों को ग्रहण करो। शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए नहीं बनी है और न ही मिली है वरन् सुख पहुँचाने के लिए मिली है। जहाँ दूसरों की निन्दा हो वहाँ मौन धारण कर लेना चाहिए। आत्मा का अपमान न करते हुए सत्य-पथ का पथिक बनना चाहिए। सत्य में बहुत बड़ी शक्ति छिपी है। अतः सत्य से विचलित नहीं होना चाहिए।

डॉ० देव चरण प्रसाद
13/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
दिगंत - भाग - 2 - गद्य खण्ड
शीर्षक :- 'उसने कहा था'
लेखक :- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न :- 'उसने कहा था' कहानी का केन्द्रीय भाव क्या है? वर्णन करें।

उत्तर :- 'उसने कहा था' कहानी में पक्के यथार्थवाद के बीच सुरुचि
की चरम मर्यादा के भीतर, भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त
निपुणता के साथ पिरोया गया है। इसकी घटना ऐसी है
जैसी बराबर हुआ करती है, पर उसमें से प्रेम का एक
स्वर्गीय स्वरूप झाँक रहा है।

'उसने कहा था' कहानी जमादार लहना सिंह के ईर्द-गिर्द
चक्कर काट रही है। वह ही उसका प्रमुख पात्र है। प्रारम्भ
से अन्त तक कहानी की जीवंतता को उसने बनाए रखा है।
संघर्षमय एवं आदर्श जीवन का वह अनुपम उदाहरण है।

कहानी अमृतसर के भीड़-भरे बाजार से शुरु होती है, जहाँ
बारह वर्ष का लड़का लहना सिंह आठ वर्ष की एक लड़की को ताँगे
के नीचे आने से बचाता है। लड़का लड़की को यह पूछते हुए छेड़ता
है- तेरी कुड़माई (मंगनी) हो गई है, लड़की धत् कहकर भाग
जाती है किन्तु एक दिन धत् कहने के बजाए कहती है- "हाँ
कल ही हो गई। देखते नहीं यह रेशम के फूलों वाला शालू।"
लहना सिंह हतप्रभ रह जाता है। कहानी आगे बढ़ती है। लहना
सिंह फौज में भर्ती है। लड़की की शादी सेना के सुबेदार से
हो जाती है। लहना सिंह को इसकी जानकारी होती है।
सुबेदारिन सेना में भर्ती अपने एक मात्र पुत्र बोधा सिंह एवं
पति सूबेदार हजारा सिंह की युद्ध में रक्षा का वचन लहना-
सिंह से ले लेती है। लहना सिंह युद्ध में अपने प्राणों की बलि
देकर उन लोगों की रक्षा की।

इस प्रकार कहानी का केन्द्रीय भाव विशुद्ध प्रेम
की अभिव्यक्ति, त्याग एवं बलिदान का आदर्श स्थापित
करना है जिसमें लेखक पूर्णरूपेण सफल हुआ है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 13|10|20
म० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

करवाल-युत जब केतु-सम भूरिश्रवा का कर गिरा,
सब शत्रु तब कहने लगे इस कार्य को अनुचित निरा,
वृषसेन, कर्ण, कृपादि ने धिक्कार अर्जुन को दिया-
"धिक्-धिक् धनंजय! पापमय दुष्कर्म यह तुमने किया"

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियाँ षष्ठ-सर्ग से उद्धृत हैं। पाण्डवों और कौरवों की सेना में घमासान युद्ध चल रहा था। इसी युद्ध में अर्जुन ने भूरिश्रवा का हाथ काट दिया। इसके पश्चात् कौरवों की सेना प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है।

कवि कहता है कि जब अर्जुन के बाण से कट कर भूरिश्रवा का हाथ केतु के समान भूमि पर गिर पड़ा तो उस समय अर्जुन के उक्त कार्य को सभी शत्रु अनुचित कहने लगे। वृषसेन, कर्ण, कृपाचार्य आदि सभी कौरव दल के प्रमुख महारथी अर्जुन को धिक्कारते हुए कहते हैं कि- हे अर्जुन तुम्हें धिक्कार है, धिक्कार है जो तुमने पाप से पूर्ण यह बुरा कर्म किया है।

यहाँ उस घटना का उल्लेख करना आवश्यक है, जब सात-सात महारथियों अकेले निहत्थे वीर अभिमन्यु पर एक साथ प्रहार कर रहे थे। तब कौरवों की सेना के प्रमुखों को क्यों नहीं लगा कि बालक अभिमन्यु पर हमलोग एक साथ मिलकर जो प्रहार कर रहे हैं वह अनुचित है।

वस्तुतः इस युद्ध में वही हो रहा है पाण्डवों की सेना की ओर से जो अर्जुन के सारथी भगवान श्री-कृष्ण संकेत करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 13/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० खुरखेली, पूर्णियाँ।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि से किस प्रकार अपने शत्रु को वश में कर लेते हैं? इस सम्बन्ध में कवि का क्या विचार है, उल्लेख करें।

उत्तर :. कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने जीवन के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि और सद्गुणों से अपने शत्रु को भी वश में कर लेते हैं। क्योंकि सद्बुद्धि और सद्गुण में ऐसी शक्ति निहित है कि वह बिना किसी प्रहार का शत्रुओं का दिल जीत लेती है।

पथिक उपस्थित नवयुवकों को कहता है कि अगर कोई अमूल्य मणिमाला को कौड़ी से बदलना चाहे, तो उससे बढ़कर बड़ा मूर्ख कौन होगा। अर्थात् देशभक्ति, देश सेवा अमूल्य मणियों की माला है तो इसके प्रति दान स्वरूप कौड़ी के समान यश और प्रसिद्धि आदि की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। रक्त-पात तो पशु करते हैं। जो रक्त बहाने में विश्वास करते हैं, वे मन ही मन भय खाते हैं, मन की कायरता से ही रक्त पात मचाकर शान्ति की स्थापना का प्रयास किया जाता है। अपने सत् चरित्र से, अपने सुन्दर स्वभाव से शत्रु को मित्र बना लेने में ही महानता है। दूसरे का रक्त बहाकर कभी भी मित्र नहीं बनाया जा सकता है। जब मनुष्य का सितारा अस्त होने लगता है, तब उसके मन में क्रोध उत्पन्न होता है जो पाशविक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। क्रोध के उत्पन्न होते ही दया-सुविचार और न्याय का मार्ग अपवित्र हो जाता है। ऐसे मार्ग को ग्रहण करने वाला पहले अपने आधार को नष्ट कर लेता है।

मनुष्य के जीवन में उसका सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है। अगर मनुष्य अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ले तो वह जगत विजेता भी बन सकता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने को क्रोध, ~~को~~ आलस्य और छल से बचाये। इससे बचते हुए आत्मिक उत्थान के लिए

शेष आगे -